# विनय जैन 'आनंद'

## ग़ज़ल

गाँव में उन गर्मियों की क्या अलग ही बात थी
नीम की छाया में खाई फ़ाँकें कच्चे आम की

प्यार में डरता रहा उसको कहीं मैं खो न दूँ
नफ़रतों में, दुश्मनी में एक बेफिक्री रही

एक तरफ़ा प्यार जितना माँ करे औलाद से
प्यार उतना कर सकेंगा क्या किसी से भी कोई

ख़ौफ़ उतना तो दिखाएँ हम अहिंसा के लिये
ताकि हिंसा कर न पाए साथ अपने कोई भी

एक लड़की का पिता ही जान सकता है वो दुख
जब कहीं कोई मसल दे फूल या कच्ची कली

आज ताऊ कर रहें हैं तंग तुझको प्यार से
पर यहीं सब यादें होंगी कल बहुत ही काम की

डर लगा रहता हो बच्चों को भले माँ बाप से
पर अलग ही होती है काका से उनकी दोस्ती

मोबाइल पर सुनते-सुनते सो जाता हूँ अक्सर
ग़ज़लें यूँ भी उतर रही हैं अब तो मेरे भीतर

लाख किताबों से पढ़कर तुम सीख सकोगे जितना
एक शे'र में उतना यूँ ही कह देता है शायर

नयी फूटती कोपल हित में कदली घात करे बिन
आने वाली पीढ़ी को फ़िर कैसे मिलते अवसर

तू कहता है..मैं जीता हूँ.. सारी अच्छी बातें
तेरे-मेरे जीवन में है बस इतना ही अंतर

बिन पेंदी के लोटे सारे उच्चासन हैं बैठे
और चाहते भोली जनता कर ले उनका आदर

उन्हें पता हैं, उनके मन में, मैल भरा है कितना
लेकिन बनकर सीधे सच्चे रखते तीखे तेवर

धैर्य धरो ओ सच्चे मानुष याद रखो तुम इतना
ये कलयुग है इसमें हाथी पर बैठेंगे बन्दर